

भीतर कोई रोता पगले- बाहर करे कमाल ^{sss}
 पूढ़ता हर इंसा का हाल - ॥२॥

१. देखे खेल अजब किसमत के ^{sss} जैसे शतरंज गोदी
 बंदे जैसे शतरंज गोदी
 जीने को काफी है वन्दे ^{sss} ॥२॥ मेहनत की दो रोटी
 वन्दे मेहनत की दो रोटी
 प्यादा से फर्जी बन बैठे ^{sss} चलते टेढ़ी चाल--

पूढ़ता हर-----

२. इतना प्यार दिया है, मर्कट ने ^{sss} ओ नन्हे से बेटो
 ओ नन्हे से बेटो
 बैठे हो लुम काल के मुँह में ^{sss} निर्धन से न रेंगे-
 वन्दे निर्धन से न रेंगे
 कौन बचा है इस दुनियाँ में ^{sss} फक्कड़ करे सवाल-

पूढ़ता हर-----

३. दीनों को अपनाना होड़ा ^{sss} ॥२॥ उल्टा उन्हें सपनाये ॥२॥
 झूठी शान के खातिर तूने ^{sss} ॥२॥ कितने घर विकवाये ^{sss}
 वन्दे ^{sss} कितने घर मिरवाये
 मात पिता को आँख दिखावे ॥२॥ बने जिया के काल

पूढ़ता हर-----

४. जैसी करनी वैसी भरनी^{sss} ॥२॥ अब काहे शरमाया
 वन्दे अब काहे शरमाया
 सारा जीवन उलट फेर में^{sss} ॥२॥ रोते हुये गमाया^{sss} ॥२॥
 अब लौ चेत जरा ओ पाणी^{sss} ॥२॥ फंसा मौत के जाल

पूढ़ता हर-----

५. ओ "श्री बाबा श्री" रोने से क्या है^{sss} ॥२॥ सब को तू अपना ले
 बाबा सब को तू अपना ले
 जो भूखे और वस्त्रहीन हैं^{sss} ॥२॥ उनको गले लगा ले
 बाबा उनको गले लगा ले
 काम पड़ेगी मीठी बोली^{sss} ॥२॥ साथ न जाये माह

पूढ़ता हर-----

भीतर कोई-----